कबीर और गांधी का जीवन दर्शन– एक तुलनात्मक अध्ययन

AMIT KUMAR SINGH
Research Scholar
DEPARTMENT OF PHILOSOPHY, UNIVERSITY OF ALLAHABAD

Abstract-कबीर और गांधी दो ऐसे महापुरूष थे जिनका जन्म अलग–अलग समय में हुआ लेकिन उनके विचारों में काफी समानता थी। दोनों में समाज की बुराइयों के खिलाफ आवाज़ उठाई। कबीर हिन्दु–मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। गांधी ने भी कबीर की भाँति दोनों की एकता पर बल दिया और जीवन पर्यन्त दोनों विचारक साम्प्रदायिक सौहार्दके लिए संघर्ष करते रहे, हिन्दू–मुस्लिम एकता को मजबूती प्रदान करते हैं। मानव जाति के हृदय में प्रेम का वास हो, भाईचारे का संबन्ध हो, हिंसा त्याग कर मानव समाज अहिंसा के पद पर चले–इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कबीर और गांधी ने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया।दोनों ही कालजयी हैं वे जितने प्रासंगिक अपने काल में थे उससे कहीं ज्यादा आज प्रासंगिक हैं। कबीर मध्यकाल में पैदा हुए लेकिन उनके विचारों में आधुनिक चिंतन धारा की झलक साफ दिखाई पडती है। गाँधी जितने प्रासंगिक स्वतंत्रता आन्दोलन के समय थे उससे भी कहीं ज्यादा आज प्रासंगिक हैं और आने वाले समय में भी प्रासंगिक रहेंगे। क्रान्तिदूत गांधी का जीवन दर्शन ही कबीरीय था, गांधी जी ने कबीर के जीवन दर्शन को अपनाया और उसी दर्शन को आधार बना कर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी। कबीर और गांधी ने मानव समाज के हर क्षेत्र पर चाहे वह सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, धर्मिक, आर्थिकया नैतिक क्षेत्र सभी पक्षों पर अपने विचार प्रकट किये हैं।

भूमिका–इतिहास गवाह है कि जब जब मानव संस्कृति अपने पद से विचलित हुई है उस समय कोई न कोई पथ प्रदर्शक किसी न किसी रूप में अवश्य उपस्थित रहा है। इतिहास के गर्भ में अनेक महापुरूषों की गाथाएँ छिपी हैं जिन्होंने अपने समय की बुराइयों के खिलाफ आवाज़ उठाई और उन बुराइयों से लड़ने के लिए समाज के अन्दर चेतना का प्राण फूँका अपने क्रान्तिकारी विचारों के कारण ही वे समाज के प्रकाश स्तम्भ सिद्ध हुए। हर युग में इन्हीं प्रकाशस्तम्भों के सहारे समाज हर बुराइयों, कुरीतियों आदि से लड़ता हुआ आगे बढ़ता रहा है और आगे भी ऐसे ही बढ़ता रहेगा।

कबीर और गांधी ऐसे ही अलग–अलग समय में थे। एक का समय 14वीं–15वीं शताब्दी था तो दूसरे का 18वीं–19वीं शताब्दी दोनों के समय की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियाँ अलग–अलग थीं लेकिन दोनों के व्यक्तित्व निर्माण में तत्कालीन सभी परिस्थतियों का योग था। कबीर और गांधी दोनों ही कालजयी हैं वे जितने प्रासंगिक अपने काल में थे उससे कहीं ज्यादा आज प्रासंगिक हैं। कबीर मध्यकाल में पैदा हुए और उस समय की परिस्थितियों ने उनकी चेतना को क्रान्तिकारी रूप दिया हम देखते हैं कि कबीर की चेतना दृष्टि अपने काल की सीमाओं का अतिक्रमण करके आधुनिक चिन्तन दृष्टि को स्पर्ष करती है। यही कारण है कि आज आधुनिक काल के बीचों–बीच खड़े होकर जब हम उनके विचारों

को पढ़तें हैं तो आश्चर्य होता है कि जिन विचारों को धारण करने में आज का समाज विचलित होने लगता है, वे कबीर के काव्य में प्रचण्ड आत्मविश्वास और निष्कम्प दृढ़ता के साथ मौजूद है। गांधी जितने प्रासंगिक स्वतंत्रता आन्दोलन के समय थे उससे भी कहीं ज्यादा आज प्रासंगिक हैं और आने वाले समय में भी प्रासंगिक रहेंगे। क्रान्तिदूत गाँधी का जीवन दर्शन ही कबीरीय था, गाँधी जी ने कबीर के जीवन दर्शन को अपनाया और उसी दर्शन को आधार बना कर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी।

आज पूरा विश्व समाज साम्प्रदायिकता के अनेक रूपों से आक्रान्त है। आतंकवाद इसी साम्प्रदायिकता का एक रूप है जो पूरी दुनिया में निर्दोषों की हत्या कर रहा है। विश्व का कोई भी कोना ऐसा नहीं है जहाँ इस आतंकवाद का साम्राज्य न फैला हो। ऐसी परिस्थिति में विश्व को कबीर और गांधी के विचारों की आवश्यकता है।कबीर और गांधी जीवन भर साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए संघर्ष करते रहे– हिन्दू–मुस्लिम एकता को मजबूती प्रदान करते हैं। मानव जाति के हृदय में प्रेम का वास हो, भाईचारे का सम्बन्ध हो, हिंसा त्याग कर मानव समाज अहिंसा के पद पर चले–इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कबीर और गांधी ने अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। घृणा–विद्वेष से भरे हुए माहौल में कबीर ने बुद्ध के पथ पर चलते हुए जिस प्रेम की मशाल को जलाया उस मशाल को लेकर गांधी आगे बढ़ते रहे और उन्होंने इस प्रेम की मशाल को अपने जीवन पर्यन्त बुझने नहीं दिया और आगे आने वाली पीढ़ियों को उस मशाल को प्रज्जवलित रखने के लिऐ प्रेरणा देकर गए।गांधी कबीर के इस दोहे को हमेशा दोहराते थे–

कबिरा यह घर प्रेम का ,खाला का घर नाहिं।

सीस उतारे मुँह धरैं , सो पैठें घर माहिं।।

कबीर और गांधी दोनों ने स्वयं यह कभी भी दावा नहीं किया कि वे किसी सुविचारित एवं व्यवस्थित विचारधारा का प्रतिपादन करना चाहते हैं। कबीर कभी भी एक पथ या विचारधारा को लेकर नहीं चले। कबीर का व्यक्तित्व आत्मविश्वास और दृढ़संकल्प से परिपूर्ण था, जो विचार धारा परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं वे भी उनके व्यक्तित्व में घुलमिल जाते हैं– उन्होंने हर विचारधारा को ध्यानपूर्वक सुना सीखा जितना उचित लगा ग्रहण किया और जिस क्षण अनुचित लगा वहीं झाड़–फटकार कर चल दिए यही कारण है कि उनके काव्य में हमें अद्वैतवाद और भक्तिमार्ग जो कि परस्पर विरोधी विचारधारा है एकसाथ दिखयी देता है। कबीर समाजसुधारक भी हैं, कवि भी हैं, दार्शनिक भी हैं, भक्त भी हैं, सन्त भी हैं अतः कहा जा सकता है कि कबीर का व्यक्तित्व बहुआयामी है सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने के लिए कबीर को जहाँ भी जिस व्यक्तित्व की आवश्यकता पड़ी है वे उसी रूप में दृढ़ता पूर्वक और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ अपने विराधियों के सामने डट जाते थे।क्बीर अपने युगमें शास्त्रवाद का विरोध करते हुए दिखाई देते हैं और तर्कवाद पर बल देते हैं। शास्त्रवाद का विरोध और तर्कवाद पर बल यह आधुनिक चिंतन का सारतत्व है। वे शास्त्रों पर करारी चोट करते हैं क्योंकि शास्त्र 'लकीर का फकीर' बनाते हैं, जीवन को तार्किकता से समझने की ताकत नहीं देते। कबीर कहते हैं–

"पोथी पढ़ि–पढ़ि जग मुआ, पण्डित भया न कोय।

ढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पण्डित होय।"

कबीरदास हिन्दू–मुस्लिम साम्प्रदायिकता पर भी चोाट की है और उन्हें सौहार्द की सीख दी–

अरे इन दोउन राह न पाई।

हिंदुन की हिंदुआई देखी, तुरकन की तुरकाई।।

उनकी इस कविता की तुलना आधुनिक युग के कवि कुमार विकल की कविता से कर सकते हैं जिसमें उन्होंने भी साम्प्रदायिकता पर चोट की है औरकहा कि–

मैं किसी कृपाण से मरूं/किसी तलवार से/या पुलिस की गोली से मरने से पहले ज़रूर चिल्लाऊँगा/ मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।

कबीर दास जी ने उन व्यवस्थाओं और मान्यताओं का प्रचण्ड विरोध किया जो वंचित वर्गों के शोषण को वैधता प्रदान करती है। उन्होंने वर्ण व्यवस्था को उसकी अमानवीयता के कारण अपनी कटु आलोचना का विषय बनाया–

जो तू बांभन बभनी का जाया,

आन बाट है क्यों नहिं आया।।

कबीर उस समय अपनी कविता में पशुओं के प्रति करूणा का भाव व्यक्त करते हुए दिखाई देते हैं। जो आज PETA जैसी संस्थाएँ पशुओं के पक्ष में कार्य कर रही हैं।

बकरी खाती पात है, ताकी काढ़ी खाल,

जो नर बकरी खात है, तिनका कौन हवाल।

कबीर समाज के प्रति अति गहन संवेदनशीलता से भरे रहे क्योंकि 'सुखिया' संसार खाता और सोता रहा जबकि संसार की वास्तविकता समझकर 'दुखिया' कबीर जागते रहे और रोते रहे। कबीर की संवेदनशीलता सक्रिय नहीं थी। बल्कि इतनी ज्यादा दृढ़ता और आत्मविश्वास से भरी थी कि बेहतर समाज के निर्माण के लिए कबीर अपना घर फूँकने को पूर्णतः तैयार थे।

"हम घर जारा आपना, लिया मुराणा हाथ।

अब घर जारौं तासु का, जो चलै हमारे साथ।।"

समाज के प्रति यह दृष्टिकोण वर्णव्यवस्था, साम्प्रदायिकता, भाषायी अभिजात्य, धार्मिक बाह्य आडंबरों, मूर्तिपूजा तथा उपभोक्तावाद जैसी सामाजिक बुराइयों के कठोर खण्डन में साफ दिखाई पड़ता है। ये सारी समस्याएँ आज के आधुनिक चिंतन धारा में विद्यमान है कबीर जितने प्रासंगिक उस समय थे उससे ज़्यादा आज प्रासंगिक हैं।

कबीर के समान गांधी जी का व्यक्तित्व भी बहुआयामी था उनके व्यक्तित्व में भी एककान्तिकारी समाजसुधारक, भक्त, दार्शनिक, सन्त आदि की छवि विद्यमान थी। गांधी जी के व्यक्तित्व पर भी कबीर के समान अनेकों विचारधाराओं की स्पष्ट छाप दिखयी देती है। गांधी जी ने अपने प्रारम्भिक जीवन में जिन

बुद्धिजीवियों को पढ़ा, सुना और सीखा सबसे कुछ न कुछ अवश्य ग्रहण किया और उसी को अपना जीवन दर्शन बनाया और उसी जीवन दर्शन के लिये अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

कबीर और गांधी ने मानव समाज के हर क्षेत्र पर चाहे वह सामाजिक हों, सांस्कृतिक हो, राजनीतिक हो, धर्मिक हो आर्थिक हो या नैतिक क्षेत्र सभी पक्षों पर अपने विचार प्रकट किये हैं। कबीर ने सामाजिक दृष्टिकोण से वर्णव्यवस्था, साम्प्रदायिकता, भाषाई अभिजात्य और धार्मिक आडम्बरों का कठोर खंडन किया। गांधी जी ने भी कबीरके जीवन दर्शन को अपनाया और उन्होंने भी मानव समाज के हर एक क्षेत्र में अपने विचारों के द्वारा क्रान्ति लाने की कोशिश की। चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो या अर्थव्यवस्था चाहे राजनीति हो या धर्म चाहें आरक्षण हो या नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण, अहिंसा की बात हो या सत्याग्रह की, स्वदेशी की बात हो या ग्राम स्वराज्य की सभी क्षेत्रों पर उन्होंने विचार किया और एक मार्ग प्रशस्त किया जिससे कि आगे आने वाली पीढ़ियां उस मार्ग पर चल कर मानव समाज और संस्कृति को उस आदर्श की ऊँचाइयों पर ले जा सके जिसका सपना गांधी जी ने देखा था। गांधी जी विश्व शांति के हिमायती थे। उन्होंने समाज को सत्य और अहिंसा का आदर्श दिया। उन्होंने सत्य को ही ईश्वर कहा और ईश्वर को ही सत्य। अहिंसा को महात्मा गांधी ने अपने जीवन में सर्वोच्च वरीयता प्रदान की तथा इसे जीवन की नैतिक एवं आध्यात्मिक शक्ति के रूप में रेखांकित किया।

कबीर और गांधी के जीवन दर्शन को समझने के लिए सैकड़ों ग्रन्थ भी लिख दिए जाएतो भी कम पड़ेंगे। आज का मानव समाज हर क्षेत्र में उन्नति को अग्रसर है लेकिन समाज के हर क्षेत्र में कुछ अवरोध अवश्य रहते हैं जिसके कारण मानव समाज अपनी निर्बाध गति से आगे नहीं बढ़ पाता। इन्हीं अवरोधों को दूर करने के लिए आज के युग को कबीर और गांधी की आवश्यकता है। आवश्यकता है हमारे समाज को इनके आदर्शों, विचारोंको आत्मसात् करने की जिससे कि मानव समाज उन्नति की राह पर अग्रसर हो सके। गांधी जी ने कहा था कि ''स्वतंत्रता से ज्यादा महत्वपूर्ण है स्वच्छता।'' स्वच्छता से सम्बन्धित गांधी जी के विचार से प्रभावित होकर भारत सरकार ने स्वच्छता अभियान प्रारम्भ किया। आज मानव सभ्यता पर्यारण के विनाश के कारण गम्भीर समस्याओं से गुजर रही है। गांधी जी ने पर्यावरण संतुलन पर भी बल दिया, वह मानव एवं प्रकृति के मध्य सामंजस्य के जरिये पर्यावरण को पोषित करना चाहते थे। आज जरूरत इस बात की है कि हमारी युवा पीढ़ी ही नहीं बल्कि समाज का हर वर्ग कबीर और गांधी के द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण करते हुए उस सत्य की प्राप्ति करे जिसे गांधी जी ने ईश्वर कहा है। तभी हमारा समाज फलेगा और फूलेगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक आदर्श समाज और राष्ट का निर्माण कर सकेगा जिसमें आने वाली पीढ़ियाँ सुरक्षित, सौहार्दपूर्ण और प्रेम के साथ अपना जीवन जी सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1– कबीर ग्रन्थावली, बाबू श्यामसुन्दर दास(वाराणसीःनागरी प्रचारणी सभा),1928।

2–कबीर ग्रन्थावली, डॉ॰ माता प्रसाद गुप्त।

3– भारतीय संस्कृति और साधना, पंण्डित गोपीनाथ कविराज।

4– कबीर, डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी(1941)।

5– भगवत गीता, एस॰ राधा कृष्णन (1977)।

6– हिन्द स्वराज, एम॰ के॰ गांधी।

7– यंग इण्डिया, एम॰ के॰ गांधी।

8– हिन्दु धर्म, एम॰ के॰ गांधी।

9– महात्मा गांधी, (1957): आत्मकथाः सत्य के प्रयोग।